मुक्त बेसिक शिक्षा पाठ्यक्रम

विषय : हिन्दी (A-101)

स्तर-'क'

1.0 औचित्य

भाषा के ज्ञान के बिना समाज में गतिशीलता संभव नहीं है। समाज और देश के विकास के लिए यह गतिशीलता अनिवार्य है। अतः भाषा का ज्ञान भी अनिवार्य है। हमारे देश में ज्ञान की दृष्टि से जनसंख्या के अनेक स्तर हैं, इसलिए भाषा ज्ञान के भी अनेक स्तर हैं। एक बड़ा समूह ऐसा है, जो अनुभवी तो बहुत है, लेकिन वह भाषा-व्यवहार में उतना सक्षम नहीं है। यदि ऐसे लोग भाषा ज्ञान के क्षेत्र में कुशल हो जाएँ तो अपने समृद्ध अनुभव को भाषा से जोड़कर अपनी चिंतन क्षमता का विकास कर पाएंगे और उसे व्यवहार में लाकर देश के विकास में सहायक होंगे। सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना भाषा के महत्त्वपूर्ण कौशल हैं। वयस्कों के संदर्भ में पढ़ने और लिखने पर कुछ अधिक बल दिया जाता है। इन बातों को ध्यान में रखते हुये संस्थान ने स्तर 'क' पर ऐसी पाठ्य सामग्री को चुना है, जिसके आधार पर शिक्षार्थी सुनने और बोलने का कौशल तो विकसित करेंगे ही, इनसे अधिक पढ़ने और लिखने में कुशल होंगे।

लक्ष्य-अन्य दक्षताओं के तहत नए शब्दों से परिचित होकर उनके अर्थ जानना, विचारों की गहराई को समझना, व्यावहारिक व्याकरण, भाषा का सही प्रयोग को भी इस पाठ्यक्रम में स्थान दिया गया है।

2.0 पूर्व अपेक्षाएँ

इस पाठ्यक्रम में प्रवेश से पूर्व शिक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है कि

- वह अपने आसपास की आम बोलचाल की हिन्दी को बोलता और समझता हो;
- बोलचाल में आने वाले हिन्दी शब्दों और सरल वाक्यों को लिख पाता हो;
- गद्य और कविता के भेद से परिचित हो;
- समाचार, चर्चा आदि को सुनकर समझ पाता हो।

3.0 उद्देश्य

पाठ्यक्रम के सामान्य व विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार है-

3.1 सामन्य उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी में-

- पढ़ने और लिखने संबंधी कौशलों का विकास होगा;

- समाचार पत्र, पत्रिकाएँ और आसान भाषा में लिखी अन्य पुस्तकें पढ़ने के प्रति रुझान पैदा हो सकेगा;
- मनोरंजन और आनंद के लिए पढ़ने की रुचि जागेगी;
- सृजनात्मक अभिव्यक्ति का विकास होगा;
- हिन्दी भाषा के माध्यम से अन्य विषयों के अध्ययन की दक्षता का विकास होगा;
- स्वतंत्र रूप से अपने भावों और विचारों को लिखित रूप से अभिव्यक्ति करने की क्षमता का विकास होगा।

3.2 विशिष्ट उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम से अध्ययन के बाद शिक्षार्थियों में निम्नलिखित दक्षताएँ विकसित हो सकेंगी –

3.2.1 सुनना, बोलना

1. मौखिक निर्देशों के अनुसार सामान्य क्रियाकलाप कर सकेंगे।
2. सुनी हुई बात को समझकर उसे अपनी भाषा में व्यक्त कर सकेंगे।
3. सही उच्चारण करते हुए अपनी बात कह सकेंगे।
4. सरल कविताओं, कहानियों को ध्यान से सुन सकेंगे तथा सुनी हुई कहानियों एवं मनोरंजक किस्सों से अपने अनुभवों को जोड़कर उसे अपने अंदाज में सुना सकेंगे।
5. परिचित वस्तुओं एवं देखी और सुनी हुई घटनाओं को सुना सकेंगे।
6. सुनी हुई बात से सम्बन्धित प्रश्न पूछ सकेंगे।
7. कविता, कहानी को आरोह अवरोह के साथ सुना सकेंगे।

3.2.2 पढ़ना-लिखना

1. सड़कों पर लिखे संकेत, होर्डिंग, सूचनापट्टों को पढ़कर समझ सकेंगे।
2. छोटे-छोटे वाक्यों को एक दूसरे से जोड़कर पढ़ सकेंगे।
3. लिखते समय वर्णों एवं शब्दों के बीच उचित दूरी का ध्यान रख सकेंगे।
4. वर्णों और मात्राओं की पहचान और प्रयोग कर सकेंगे।
5. नजदीकी परिवेश को देखकर या उसके बारे में सुनकर छोटे-छोटे वाक्यों में अपनी प्रतिक्रिया लिख सकेंगे।
6. अक्षर जोड़कर पढ़ने के साथ-साथ वाक्य को समझकर पढ़ सकेंगे।
7. लिखते समय शिरारेखा और विराम चिह्न का प्रयोग ठीक प्रकार से कर सकेंगे।

3.2.3 समझ चिंतन एवं मनन की क्षमताओं का विकास

1. मौखिक और लिखित विषय-वस्तु के मुख्य भाव को समझने का प्रयास कर सकेंगे।
2. पाठ को पढ़ने या सुनने के बाद पाठ में आई घटनाओं का स्मरण, उससे संबंधित जिज्ञासा और संवेदनात्मक दृष्टिकोण विकसित करने का प्रयास कर सकेंगे।

3.2.4 व्याहारिक व्याकरण का संरचनात्मक स्वरूप

1. संज्ञा, विशेषण, क्रिया और सर्वनाम की पहचान।
2. लिंग और वचन की पहचान।
3. काल बोध की पहचान
   - वर्तमान काल
   - भूतकाल
   - भविष्यत काल
   - समानार्थी शब्दों और संयुक्त वाक्यों की जानकारी।

3.2.5 शब्द-भंडार

दैनिक जीवन में काम आने वाले सामान्य एवं प्रयोजन मूलक शब्दों की पहचान और प्रयोग।

3.2.6 लेखन अभ्यास

किसी भी दिए गए विषय पर 8-10 पंक्तियाँ लिखना।

3.2.7 स्व-अध्ययन

अपने आस-पास के पुस्तकालयों में उपलब्ध रुचिकर सामग्री को पढ़ना भाषा सीखने में सहायक होगा। लोककथाओं, लोककलाओं एवं लोकनायकों आदि के विषय में जानकारी प्राप्त करना एक जिम्मेदार नागरिक बनाने में सहायक होगा।

4.0 पाठ्यक्रम का परिचय

शिक्षार्थियों में सुनना, बोलना, पढ़ना और लिखना कौशल का विकास करने के लिए विविध प्रकार की सामग्री प्रदान की जाएगा। भाषा-शिक्षण के चारों कौशल परस्पर संबद्ध है, किन्तु मूल्यांकन की सुविधा के लिए इनके अलग-अलग लक्ष्य रखे गए हैं।

5.0 पाठ्यक्रम का विवरण

पाठ्यक्रम को 100 घंटों में पूरा किया जाएगा। प्रत्येक कौशल के लिए निम्नानुसार समय का निर्धारण किया गया है–

5.1 सुनना और बोलना

समय : 10 घंटे

लक्ष्य – इस इकाई का लक्ष्य शिक्षार्थियों में भाषा सुनने और बोलने के कौशल को विकसित करने से संबंधित जानकारी देना है, जिससे वे बेहतर तरीके से दूसरों की बातों को समझकर सबके और अपने मन की बातें दूसरों तक पहुंचा सकेंगे। इसके लिए सुनना और बोलना कौशल पर आधारित अभ्यास भी दिए गए हैं।

5.2 पढ़ना

समय – 40 घंटे

लक्ष्य – शिक्षार्थियों के पठन कौशल का विकास करने के उद्देश्य से काव्य तथा गद्य से संबंधित विविध प्रकार की सामग्री प्रदान की जा रही है, जिसमें कुछ कविताएँ, कहानियाँ, लोककथा, नाटक, जीवनी और पत्र हैं। यह सामग्री व्यावहारिक ज्ञान–वृद्धि के लिए दी जा रही है। यह अपेक्षा की जाती है की यह सामग्री एक और भाषिक कुशलताओं की प्राप्ति में सहायक होगी तथा दूसरी ओर हिंदी साहित्य की कुछ विधाओं की सामान्य जानकारी और उनके पढ़ने के प्रति रुझान पैदा करने में सहायक होगी। प्रस्तावित पाठ्यक्रम में प्रस्तुत की जाने वाली पठन–सामग्री की रूपरेखा एस प्रकार है –

कविताएँ – कविताओं के तीन पाठ हैं जिनमें से एक में मध्ययुगीन कवियों – कबीर, रहीम और तुलसी के दोहे हैं। शेष पाठों में खड़ी बोली हिंदी की कवितायें हैं।

गद्य – गद्य खंड में रोचक कहानियों, लोक कथा, नाटक, जीवनी और पत्र हैं। इन पाठों की विषयवस्तु आम जीवन, सामाजिक समस्याओं से संबंधित है और उनमें परोक्ष रूप से प्रौढ़ शिक्षा की राष्ट्रीय पाठ्यचर्या के प्रमुख बिन्दुओं को ध्यान रखा गया है।

5.3 लिखना

समय – 40 घंटे

लक्ष्य – इस कौशल का विकास करने के लिए लक्ष्य समूह को ध्यान में रखते हुये पाठ्यक्रम में लेखन संबंधी सामान्य तथा व्यावहारिक – लेखन को रखा गया है जो इस प्रकार है :

वाक्य–लेखन

कविता – लेखन

कहानी – लेखन

शिकायती पत्र, मित्र को पत्र

5.4 व्याकरण तथा भाषा प्रयोग

समय - 10 घंटे

लक्ष्य - व्यावहारिक व्याकरण तथा भाषा प्रयोग का अभिन्न अंग है। यहाँ व्यवहारिक भाषा प्रयोग को पाठ-सामग्री के माध्यम से सरल एवं रोचक ढंग से समाधान किया गया है। इसके लिए निर्धारित बिन्दु इस प्रकार हैं -

वर्तनी और उच्चारण

स्वर एवं उनकी मात्राओं की पहचान

संज्ञा, विशेषण, क्रिया और सर्वनाम की पहचान

मिलते-जुलते वर्णों की पहचान और उनके प्रयोगों में अंतर

लिंग और वचन की पहचान

काल की पहचान - वर्तमान काल, भूतकाल, भविष्यत काल।

प्रमुख विराम चिह्नों के पहचान एवं उनका प्रयोग।

6. पाठ विवरण

क्र.सं.	पाठ का नाम	पाठ का मूल भाव	विधा	व्याकरण बिंदु
1.	भारत वतन हमारा	राष्ट्रीय एकता	कविता	1. इ, ई तथा उ, ऊ वर्णों की पहचान और इनके प्रयोगों में अंतर 2. ि ी तथा ु ू मात्राओं की पहचान और इनके प्रयोगों में अंतर
2.	खेजड़ली गाँव का शहीद मेला	पर्यावरण	कहानी	1. ए ऐ तथा ओ औ वर्णों की पहचान तथा इनके प्रयोगों में अंतर 2. े ै तथा ो ौ मात्राओं की पहचान और इनके प्रयोगों में अंतर
3.	ऋचा की कृपा	स्वास्थ्य, स्वच्छता	कहानी	1. स्वर का प्रयोग और उसकी मात्रा का ज्ञान 2. र के तीन रूपों का ज्ञान
4.	सब पढ़ें-आगे बढ़ें	शिक्षा	नाटक	ड ड़ तथा ढ ढ़ वर्णों की पहचान और इनके प्रयोगों में अंतर
5.	जीवन-मूल्य	कबीर, रहीम और तुलसी के दोहे	कविता	ब व तथा न ण वर्णों की पहचान और इनके प्रयोगों में अंतर

6.	भय का भूत	अंधविश्वास मिटाना	लोक-कथा	श ष स तथा य ज वर्णों की पहचान और इनके प्रयोगों में अंतर
7.	मन की पीड़ा	गांधी जी के जीवन की घटना	जीवनी	1. क्ष त्र ज्ञ में दो वर्णों की पहचान और उनके प्रयोगों में अंतर 2. 'हे राम्' में लगी टेढ़ी रेखा ् की जानकारी 3. , । ? - ! " " विराम चिह्नों की जानकारी
8.	बुद्धि का फल	हास्य-मनोरंजन	कहानी	1. संज्ञा शब्दों की पहचान 2. स्त्रीलिंग-पुल्लिग शब्दों की पहचान, उनमें अन्तर व उनका प्रयोग 3. एकवचन और बहुवचन की पहचान व प्रयोग
9.	लड़का-लड़की एक समान	लिंग-भेद	कविता	सर्वनाम की पहचान तथा प्रयोग
10.	विक्की की सद्बुद्धि	वृद्धजनों का सम्मान	कहानी	1. क्रिया की पहचान 2. क्रिया के तीनों कालों का ज्ञान
11.	बात ऐसे बनी	सूचना का अधिकार	कहानी	विशेषण
12.	आगरा की सैर	वर्णन-आगरा, फतेहपुर सीकरी	पत्र	संयुक्त वाक्य, समानार्थी शब्द

7. अध्ययन-योजना

यह पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से दिया जाएगा। पाठ्यक्रम मूलत: स्वाध्याय पर आधारित है। इस बात पर गौर करते हुए शिक्षार्थी के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर सामग्री तैयार की गई है। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं, ताकि शिक्षार्थी की धारण-क्षमता विकसित हो सके तथा लिखने व विचार करने की क्षमता भी बढ़े।

शिक्षार्थियों के लिए अध्ययन केन्द्रों पर सम्पर्क-कक्षाओं का भी प्रावधान है। इन सम्पर्क-कक्षाओं में शिक्षार्थी अपनी विषय सम्बन्धी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे। साथ ही, वहाँ पर अन्य शिक्षार्थियों से भी इन समस्याओं पर चर्चा कर सकेंगे। शिक्षार्थी साक्षरता केन्द्रों / प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर भी अपनी विषय-सम्बन्धी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे।

8. मूल्यांकन-योजना

8.1 स्व-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी अपना मूल्यांकन करते रहेंगे। इसके लिए हर पाँच पाठ के बाद एक जाँच पत्र दिया गया है। जाँच पत्र में उन्हीं चार पाठों से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गए हैं। शिक्षार्थी को इन प्रश्नों के उत्तर देने हैं। पुस्तक के अन्त में इन जाँच पत्रों के सही उत्तर दिए गए हैं। शिक्षार्थी अपने उत्तरों का सही उत्तरों से मिलान करके अपना मूल्यांकन करते रहेंगे। इस तरह पाठ्यक्रम में स्व-मूल्यांकन की पद्धति अपनाई गई है।

8.2 बाह्य-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत शिक्षार्थी का बाह्य मूल्यांकन होगा। इसके लिए कुल 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रश्न पत्र तीन घंटे मिनट का होगा। इसमें पाठ आधारित प्रश्न होंगे। बोध पर आधारित प्रश्न भी होंगे। साथ ही, सामान्य समझ पर आधारित प्रश्न भी होंगे। प्रश्न वस्तुनिष्ठ, अति लघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय होंगे।

मुक्त बेसिक शिक्षा पाठ्यक्रम
पर्यावरण अध्ययन (A-102)
स्तर 'क'

1. औचित्य

हर व्यक्ति चाहता है कि वह अच्छा जीवन बिताए। अभी जिस स्थिति में है, भविष्य में उससे बेहतर स्थिति में रहे। उसका स्वास्थ्य अच्छा हो, पारिवारिक जीवन सुखद हो, वह अच्छा अभिभावक सिद्ध हो, अपने समाज को बेहतर तरीके से समझ सके। साथ ही, उसकी इच्छा होती है कि वह अपने आस-पास के बारे में जाने, देश के बारे में जाने, देश के दूसरे हिस्सों में रहने वालों के बारे में जाने। नई जानकारियों से अवगत हो। अपने अधिकारों के बारे में जाने। हितकारी योजनाओं को समझे। यह सब उसके लिए जरूरी भी है। इसे जानने की शुरुआत जीवन के किसी भी पड़ाव पर हो सकती है। इसी उद्देश्य से यह पाठ्यक्रम तैयार किया गया है। इसमें परिवार की धारणा और परिवार के सदस्यों के आपसी सम्बन्ध, महिलाओं और बुजुर्गों का सम्मान, सामाजिक परिवेश, पर्व व त्यौहार, परिवेश का संरक्षण, ग्रह, मौसम और ऋतु-परिवर्तन, हमारी बुनियादी जरूरतें, संतुलित भोजन, शारीरिक स्वच्छता, परिवहन व संचार के साधन, राष्ट्रीय प्रतीक आदि हमारे जीवन से जुड़े अनेक विषयों पर विषय सामग्री दी गई है। साथ ही, शिक्षा का अधिकार, सूचना का अधिकार, उपभोक्ता अधिकार, मनरेगा आदि जैसे समसामयिक बिंदुओ पर भी विषय सामग्री अध्ययन हेतु दी गई है।

2. पूर्व अपेक्षाएँ

इस पाठ्यक्रम में प्रवेश से पूर्व शिक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह-

- सामान्य भाषा में लिखे गए को ठीक से पढ़ सके।
- अपने परिवेश, पारिवारिक व सामाजिक संबंधों के प्रति जागरूक हो सके व अन्य को समझा सके।
- नई बातों के लिए जिज्ञासु होकर पढ़ने का प्रयास कर सके।

3. उद्देश्य

पाठ्यक्रम के सामान्य व विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार हैं-

3.1 विशिष्ट उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी-

- परिवार, समाज व परिवेश के सम्बन्ध में अपनी जानकारी में वृद्धि कर सकेंगे।
- शिक्षार्थी विभिन्न विषयों का ज्ञान प्राप्त करते हुए अपने वर्तमान जीवन में व भविष्य में अपने कार्य-स्थल पर व्यक्तिगत व सामाजिक उन्नति के लिए उसका प्रयोग कर सकेंगे।

- सामाजिक स्थितियों की गहन समझ के साथ उनमें जागरूकता पैदा होगी तथा वे अपनी मौजूदा समस्याओं के लिए जिम्मेदार कारकों को समझ सकेंगे। साथ ही, जीवन को बेहतर बनाने व समस्याओं को सुलझाने के तरीके ढूँढ़ सकेंगे।
- शिक्षा की मुख्य धारा में शामिल होने के लिए शिक्षार्थी तैयार हो सकेंगे।
- शिक्षार्थियों में वैज्ञानिक दृष्टिकोण का विकास होगा।

3.2 सामान्य उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा कर लेने के बाद–

- शिक्षा के अधिकार, सूचना के अधिकार, उपभोक्ता के अधिकारों के बारे में जागरूक हो सकेंगे।
- मनरेगा योजना के बारे में बता सकेंगे।
- राष्ट्र के विभिन्न प्रतीकों के बारे में जागरूक हो सकेंगे।
- राष्ट्रीय पर्वों और उनके महत्त्व को विश्लेषित कर सकेंगे।
- परिवहन व संचार के विभिन्न साधनों के बारे में जान कर उनसे होने वाले लाभों से परिचित हो सकेंगे।
- शरीर की साफ-सफाई के महत्त्व के बारे में समझा सकेंगे।
- संतुलित भोजन के महत्त्व को समझा सकेंगे।
- अभिभावक के रूप में बच्चों के प्रति अपनी जिम्मेदारी का वर्णन कर सकेंगे।
- परिवेश के संरक्षण में अपनी भूमिका को पहचान सकेंगे।
- ग्रहों व तारों के अन्तर को बता सकेंगे।
- रात-दिन होने व मौसम के परिवर्तन के सम्बन्ध में वैज्ञानिक तथ्यों को समझा सकेंगे।
- अपने सामाजिक परिवेश के बारे में अधिक स्पष्टता से समझ सकेंगे।
- समाज के विकास में परिवार और समुदाय की भूमिका को बता सकेंगे।
- जल संरक्षण के महत्त्व को जानकर उनके संरक्षण का प्रयास कर सकेंगे।
- भाषायी कौशलों - पढ़ना, लिखना व बोलना को पुष्ट कर सकेंगे।

4. पाठ्यक्रम का संक्षिप्त परिचय

प्रस्तुत पाठ्यक्रम को आसान भाषा में विकसित किया गया है तथा पाठों में विवरण व उदाहरण सामान्य जीवन से जुड़े हुए दिए गए हैं। यह पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा प्रणाली के माध्यम से दिया जाएगा।

संपूर्ण पाठ्यक्रम को 12 पाठों में बाँटा गया है। प्रत्येक पाठ को विषय के अनुसार विभिन्न इकाइयों में बाँटा गया है। इससे शिक्षार्थी को पाठ पढ़ने में आसानी होगी। चूंकि इन पाठों का निर्माण दूरस्थ शिक्षा से होगा, अत: स्वमूल्यांकन हेतु अनेक तरीके पाठों में दिए जाएंगे।

5. पाठ्यक्रम की संरचना

यह पाठ्यक्रम कुल 100 घंटे का है। इसे कुल 12 पाठों में बाँटा गया है। पाठ्यक्रम का समयाविधि व अंकों के आधार पर विभाजन इस प्रकार है:

क्र. सं.	पाठ	समय	अंक
1.	परिवार की अवधारणा और आपसी सम्बन्ध	7 घंटे	8
2.	हमारा सामाजिक परिवेश	7 घंटे	8
3.	हमारे पर्व और त्यौहार	6 घंटे	8
4.	परिवेश की अवधारणा	6 घंटे	8
5.	परिवेश का संरक्षण	6 घंटे	8
6.	सूर्य, चन्द्रमा, तारे, रात-दिन और ॠतुएँ	10 घंटे	8
7.	हमारी बुनियादी जरूरतें	6 घंटे	8
8.	भोजन	8 घंटे	10
9.	बाह्य अंगों का रख-रखाव व स्वच्छता	10 घंटे	8
10.	परिवहन एवं संचार	10 घंटे	8
11.	राष्ट्रीय पहचान	12 घंटे	8
12.	हमारा सामाजिक-आर्थिक परिवेश	12 घंटे	10
	कुल	**100 घंटे**	**100**

6. पाठ्यक्रम विवरण

पाठ-1 : परिवार की अवधारणा और आपसी सम्बन्ध

1. परिवार की अवधारणा
2. सम्बन्धों का महत्त्व
3. समाज में लड़कियों और महिलाओं के प्रति सम्मान
4. वृद्धों तथा शारीरिक व मानसिक रूप से अशक्त लोगों की मन:स्थिति को समझना और उनकी आदरपूर्वक सहायता करना।

पाठ-2 : हमारा सामाजिक परिवेश

1. विभिन्न व्यवसायों एवं उनसे जुड़े लोगों का सम्मान करना।
2. आस-पास की जन-सुविधाएँ
3. परिवार, पास-पड़ोस और समुदाय की सामाजिक विकास में भूमिका।

पाठ-3 : हमारे पर्व और त्यौहार

1. सामाजिक व राष्ट्रीय पर्वों का महत्त्व।

पाठ-4 : परिवेश की अवधारणा

1. परिवेश का स्वरूप।
2. भौतिक और जैविक परिवेश।
3. वस्तुओं का उनकी विशेषताओं के आधार पर वर्गीकरण - सजीव (पौधे एवं जन्तु), निर्जीव (प्राकृतिक / मानव निर्मित)।
4. सामान्य पौधों तथा जन्तुओं की पहचान।

पाठ-5 : परिवेश का संरक्षण

1. उपयोगी जन्तु - दूध देने वाले, मांस, अंडे देने वाले जन्तु, ऊन व रेशम देने वाले जन्तु, भार (सामान) ढोने वाले जन्तु, पालतू जन्तु।
2. पौधों के मुख्य भाग - जड़ तना, पत्तियाँ, फूल, फल। पौधों के विभिन्न उपयोग, पारिस्थितिक संतुलन, खाद्य शृंखला और खाद्य जाल।
3. पर्यावरण संरक्षण : जल, जंगल और जमीन का महत्त्व तथा इनका बचाव।

पाठ-6 : सूर्य, चन्द्रमा, तारे, रात-दिन और ऋतुएँ

1. हमारा सौर-मंडल : सूर्य, चन्द्रमा और तारों का महत्त्व और उनका आपस में सम्बन्ध, उनके प्रति भ्रांतियाँ तथा निराकरण।
2. दिन-रात का होना और ऋतु परिवर्तन।

पाठ-7 : हमारी बुनियादी जरूरतें

1. मानव जीवन के लिए बुनियादी जरूरतें - भोजन, पानी, हवा, कपड़ा, मकान का महत्त्व और उनका रख-रखाव।

पाठ-8 : भोजन

1. शरीर के लिए भोजन का महत्त्व : काम करने की शक्ति देने वाला, बढ़ने में तथा मरम्मत करने में सहायक, रोगों से बचाव करने वाला।
2. भोजन के विभिन्न पोषक तत्त्व और उनके स्रोत।

3. संतुलित आहार।

4. भोजन की स्वच्छता, रख-रखाव और सावधानियाँ।

5. पेयजल – स्वस्थ शरीर के लिए पानी का महत्त्व, पानी के स्रोत और पानी को शुद्ध करने की कुछ विधियाँ।

पाठ-9 : बाह्य अंगों का रख-रखाव व स्वच्छता

1. मानव शरीर के बाह्य अंग – बाल, आँखें, कान, नाक, मुँह, दाँत, हाथ-पैर, नाभि, त्वचा तथा गुप्तांग के बारे में जानकारी और शरीर में उनका महत्त्व।

2. शरीर के बाह्य अंगों की स्वच्छता, रख-रखाव और सावधानियाँ।

पाठ-10 : परिवहन एवं संचार

1. परिवहन का महत्त्व और क्रमिक विकास।

2. परिवहन के प्रकार – सड़क परिवहन, रेल परिवहन, जल परिवहन, वायु परिवहन और पाइप लाइन परिवहन।

3. संचार के विभिन्न साधन एवं उनका महत्त्व।

4. मनुष्यों और पशुओं में विविध संकेतों द्वारा संचार के तरीके और उनका महत्त्व।

पाठ-11 : राष्ट्रीय पहचान

1. राष्ट्रीय ध्वज, राष्ट्रीय चिह्न, भारतीय मुद्रा, राष्ट्रीय पशु, राष्ट्रीय पक्षी, राष्ट्रीय फूल और राष्ट्रीय खेल का परिचय और महत्त्व।

2. राष्ट्र गान और राष्ट्रीय गीत की जानकारी तथा राष्ट्रीय एकता में उनका महत्त्व।

3. राष्ट्रीय दिवसों या राष्ट्रीय पर्वों की जानकारी और महत्त्व।

पाठ-12 : हमारा सामाजिक-आर्थिक परिवेश

1. भूमंडलीकरण की अवधारणा और महत्त्व।

2. शिक्षा का अधिकार – परिचय और मुख्य प्रावधान।

3. सूचना का अधिकार – परिचय, मुख्य प्रावधान, शुल्क, सूचना देने के नियम।

4. महात्मा गांधी राष्ट्रीय रोजगार गारंटी अधिनियम (मनरेगा) – मनरेगा में रोजगार पाने के नियम, मजदूरी का भुगतान, कार्य-स्थल पर सुविधाएँ।

7. अध्ययन योजना

यह पाठ्यक्रम मूलत: स्वाध्याय पर आधारित है। इसके लिए शिक्षार्थियों के मानसिक स्तर व परिवेश को देखते हुए पठन-सामग्री तैयार की गई है। चूँकि पाठ्यक्रम स्वाध्याय पर आधारित है अत: हर पाठ के अंत में पाठ से सम्बन्धित प्रश्न दिए गए हैं, ताकि शिक्षार्थी की धारण-क्षमता व लिखने की दक्षता भी विकसित होती रहे।

शिक्षार्थियों के लिए अध्ययन-केन्द्र पर सम्पर्क-कक्षाओं का भी प्रावधान है। इन कक्षाओं में शिक्षार्थी अपनी विषय-सम्बन्धी समस्याओं का समाधान कर सकेंगे। साथ ही, अपने साथियों से भी इन समस्याओं पर चर्चा कर सकेंगे। शिक्षार्थी साक्षरता केन्द्रों / प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर भी अपनी विषय-सम्बन्धी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे।

8. मूल्यांकन योजना

8.1 स्व-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी अपना स्वयं का मूल्यांकन करता रहेगा। इसके लिए प्रत्येक चार पाठ के बाद जाँच पत्र दिया गया है, जिसमें उन चार पाठों से सम्बन्धित प्रश्न हैं। शिक्षार्थी उन प्रश्नों के उत्तर देंगे तथा अंत में दिए गए उन प्रश्नों के सही उत्तर से अपना उत्तर मिलाएँगे। इस तरह, पाठ्यक्रम में स्व-मूल्यांकन की पद्धति अपनाई गई है।

8.2 बाह्य मूल्यांकन

पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत शिक्षार्थी का बाह्य मूल्यांकन होगा। इसके लिए कुल 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। इस मूल्यांकन में शिक्षार्थी की लिखित परीक्षा होगी। इसकी अवधि तीन घंटे की है। प्रश्न पत्र में पाठ व बोध आधारित प्रश्न होंगे।

मुक्त बेसिक शिक्षा पाठ्यक्रम
गणित (A-103)
स्तर 'क'

1. मूलाधार

मुक्त बेसिक शिक्षा (प्रौढ़) स्तर 'क' पर अधिगम हेतु गणित एक महत्त्वपूर्ण विषय है। गणित की अवधारणाओं के माध्यम से शिक्षार्थी वास्तविक जीवन की परिचित एवं अपरिचित परिस्थितियों में समस्या समाधान की योग्यता अर्जित करता है। परिशुद्धता, विवेकपूर्ण एवं विश्लेषणात्मक चिंतन जैसी योग्यताओं के विकास में गणित का विशेष योगदान है। इस स्तर पर शिक्षार्थी में गणित सीखने से परिस्थितियों एवं दैनिक जीवन की वास्तविक परिस्थितियों से जोड़ने के लिए विभिन्न अवधारणाओं के समझ के आधार पर अधिक बल मिलता है। इस स्तर पर शिक्षार्थी में समस्या समाधान के कौशलों, अभिवृत्ति एवं कार्यशैली विकसित करने का प्रयास है। वर्तमान स्तर पर पाठ्यचर्या का निर्माण इस उद्देश्य से किया गया है कि शिक्षार्थी दैनिक जीवन की विभिन्न गतिविधियों में गणित की प्रासंगिकता से अवगत हो सके।

2. उद्देश्य

मुक्त बेसिक शिक्षा (प्रौढ़) स्तर 'क' पर गणित पढ़ाने का मुख्य उद्देश्य शिक्षाथियों को निम्न कार्यों में सक्षम बनाना है :

- आधारभूत अवधारणाओं, तथ्यों, प्रतीकों तथा प्रक्रियाओं का समझना तथा संबंधित ज्ञान अर्जित करना।
- अपने परिवेश में मापन संबंधी अनुभवों को अर्जित करना तथा उनको अपने जीवन से उपयोग करना।
- शाब्दिक समस्याओं का गणितीय रूप में हल प्रस्तुत करना।
- गणित एवं इसकी अवधारणाओं के प्रयोग के प्रति सकारात्मक अभिवृत्ति का विकास करना।
- गणित के व्यापक प्रयोग की सराहना करने के अवसर प्रदान करना।
- शिक्षार्थी को आगामी स्तर के आधार को सुदृढ़ करना।
- शिक्षार्थी में आत्मविश्वास जागृत करना जिससे अगली पीढ़ी की शिक्षा में वह सकारात्मक भूमिका अदा कर सके।

3. पाठ्यचर्या संरचना

मुक्त बेसिक शिक्षा (प्रौढ़) स्तर 'क' पर गणित की पाठ्यचर्या को सात पाठों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक पाठ में विभिन्न प्रकरणों का समावेश किया गया है। पाठों की संख्या, सुझावित अध्ययन अवधि तथा प्रत्येक इकाई के लिए निर्धारित अंक इस प्रकार है :

मुक्त बेसिक शिक्षा स्तर 'क' की पाठ्यचर्या

क्रम संख्या	पाठ	अध्ययन अवधि (घंटों में)	अंक
1.	संख्याओं का पढ़ना, बनाना, लिखना तथा सीखना	15	15
2.	संख्याओं का जोड़ तथा घटाव	20	20
3.	गुणा	10	10
4.	भाग	10	10
5.	भिन्न	10	10
6.	मापन	15	15
7.	ज्यामितीय आकृतियाँ	20	20
	योग	**100**	**100**

4. पाठ्यचर्या विवरण

पाठ 1 : संख्याओं का पढ़ना, बनाना, लिखना तथा सीखना

1 से 9, 10 से 99, 100 से 999 तथा 1000 तक की संख्याओं को अंकों तथा शब्दों में लिखना, पढ़ना तथा समझना, संख्याओं में अंकों के स्थानीय मानों को पढ़ना व लिखना तथा समझना-दो अंकों वाली संख्याओं का स्थानीय मान, तीन अंकों वाली संख्याओं का स्थानीय मान, चार अंकों की सबसे छोटी संख्या की जानकारी, तीन अंकों तक की संख्याओं की तुलना करना और उनको घटते बढते क्रम में लिखना, पढ़ना तथा समझना।

पाठ 2 : संख्याओं का जोड़ तथा घटाव

दैनिक जीवन में संख्याओं के जोड़ व घटाव का महत्त्व और उपयोग, एक अंक वाली संख्याओं को जोड़ना व घटाना, दो अंकों व तीन अंकों की संख्याओं को बिना हासिल तथा हासिल लगाकर जोड़ तथा उधार के साथ घटाव, दो संख्याओं के जोड़ व घटाव का अनुमान लगाना, रुपये-पैसे का साधारण जोड़ व घटाव।

पाठ 3 : गुणा

गुणा का दैनिक जीवन में उपयोग एवं महत्त्व, गुणा को बार बार जोड़ के रूप में समझना, 1 से 10 तक के पहाडों को लिखना तथा समझना, एक अंक की संख्या में एक अंक वाली संख्या से गुणा करना, दो या तीन अंकों की संख्या में एक अंक की संख्या से गुणा करना तथा समझना, दो या तीन अंकों की संख्या में दो अंकों की संख्या से गुणा करना (जिसमें गुणनफल 1000 से कम हो)।

पाठ 4 : भाग

भाग को बार बार घटाने के रूप में समझना, दो या तीन अंकों की संख्याओं को एक अंक की संख्या से भाग करना, भाग का दैनिक जीवन में महत्त्व तथा उपयोग।

पाठ 5 : भिन्न

भिन्न का दैनिक जीवन में उपयोग तथा महत्त्व, किसी वस्तु के बराबर हिस्सों की जानकारी, पूरी वस्तु के हिस्सों को भिन्न के रूप में समझना, भिन्न को हर या अंश के रूप में लिखना, पढ़ना और समझना।

पाठ 6 : मापन

लम्बाई को सेंटीमीटर, मीटर, किलोमीटर में नापना, भार को ग्राम व किलोग्राम में तौलना, तरल पदार्थों को लीटर व मिलीलीटर में नापना।

पाठ 7 : ज्यामितीय आकृतियाँ

ज्यामिति का अर्थ और उपयोग, ज्यामिति की मूल इकाई, समतल में आयत, वर्ग, त्रिभुज की आकृतियों की जानकारी, ठोस वस्तुएं घनाभ, घन, बेलन, शंकु, गोल आकृतियों की जानकारी, समतल आकृतियों में डिजाइन तथा ठोस आकृतियों से मॉडल बनाना, वस्तुओं को आकर्ज़क बनाने में आकृतियों के योगदान की सराहना, पैमाना-पेंसिल के उपयोग से रेखाओं व विभिन्न आकृतियों का बनाना।

5. मूल्यांकन योजना

5.1 स्व-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी अपना स्वयं का मूल्यांकन करता रहेगा। इसके लिए प्रत्येक पाठ के बाद अभ्यास पत्र दिया गया है, जिसमें उस पाठों से सम्बन्धित प्रश्न हैं। शिक्षार्थी उन प्रश्नों के उत्तर देंगे तथा अंत में दिए गए उन प्रश्नों के सही उत्तर से अपना उत्तर मिलाएंगे। अभ्यास हेतु जांच पत्र भी दिए गए हैं। इन जांच पत्रों को हल करके अपने उत्तरों का मिलान करेंगे। इस तरह, पाठ्यक्रम में स्व-मूल्यांकन की पद्धति अपनाई गई है।

5.2 बाह्य मूल्यांकन

पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत शिक्षार्थी का बाह्य मूल्यांकन होगा। इसके लिए कुल 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। इस मूल्यांकन में शिक्षार्थी की लिखित परीक्षा होगी। इसकी अवधि 3 घंटे की है। प्रश्न पत्र में पाठ आधारित प्रश्न हैं व बोध पर आधारित प्रश्न भी हैं। प्रश्न वस्तुनिष्ठ भी है, अति लघु उत्तरीय भी हैं तथा लघु उत्तरीय भी होंगे।

मुक्त बेसिक शिक्षा पाठ्यक्रम
बेसिक कम्प्यूटर कौशल (A-104)
स्तर-'क'

1. औचित्य

भारत एक विकासशील देश है और कहते हैं कि विकास यदि सर्वांगीण न हो अर्थात सभी क्षेत्रों में न हो तो वह सार्थक नही हो पाता। किसने सोचा था कि कंप्यूटर जैसी एक छोटी सी मशीन भी हमारे विकास में अहम् भूमिका निभाएगी। एक मशीन और हजारों काम। अब तो यह हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन गया है। ऐसा होना आवश्यक भी है जब बिजली, पानी, शिक्षा, अस्पताल, रेल, व्यापार आदि सभी जगह कंप्यूटर का व्यापक रूप में प्रयोग हो रहा है। इस स्थिति में यह आवश्यक हो जाता है कि हम कंप्यूटर के बारे में जानकारी प्रापत करें। जाकारी प्राप्त करने के साथ ही यह भी आवश्यक है कि कैसे हम अपने दैनिक प्रयोग में कंप्यूटर का कुशल रूप से व्यवहार कर सकते हैं। बेसिक कंप्यूटर कौशल का यह पाठ्यक्रम कंप्यूटर ज्ञान के साथ ही इसके अनुप्रयोग पर भी केन्द्रित है।

2. पूर्व अपेक्षायें

इस पाठ्यक्रम में प्रवेश से पूर्व विद्यार्थी से अपेक्षा की जाती है की वह–

- कंप्यूटर के उपकरण संबंधी ज्ञान प्राप्ति की इच्छा रखता है।
- कंप्यूटर के दैनिक जीवन में प्रयोग संबंधी ज्ञान प्राप्ति हेतु प्रयास करना चाहता है।

3 उद्देश्य

पाठ्यक्रम के सामान्य व विशिष्ट उद्देश्य इस प्रकार है–

3.1 सामान्य उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने बाद शिक्षार्थी स्वतंत्र रूप से कम्प्यूटर के विभिन्न उपकरणों को जान सकता है। वह कंप्यूटर द्वारा किये जाने वाले आधारभूत कार्यों को भी आसानी से कर सकेगा।

3.2 विशिष्ट उद्देश्य

इस पाठ्यक्रम को पूरा करने के बाद शिक्षार्थी–

1. कंप्यूटर के विभिन्न उपकरणों को पहचान सकेगा।
2. कंप्यूटर की कार्य प्रणाली के बारे में बता सकेगा।

3. कंप्यूटर के विविध इनपुट, आउटपुट उपकरणों की पहचान कर सकेगा।

4. पेंट, ब्रश एवं कंप्यूटर गेम्स का प्रयोग कर सकेगा।

5. वर्ड प्रोसेसिंग सॉफ्टवेयर पर कार्य कर सकेगा।

4.0 पाठ्यक्रम का संक्षिप्त परिचय

पाठ्यक्रम को छः पाठों में बांटा गया है। इनमें दिये गये बिंदुओं को विविध उपकरणों के साथ उनके प्रयोग आदि को भी समझाया गया है।

5. पाठ्यक्रम की संरचना

यह पाठ्यक्रम कुल 100 घंटे का है। इसे कुल 6 पाठों में बाँटा गया है। पाठ्यक्रम का समयाविधि व अंकों के आधार पर विभाजन इस प्रकार है:

क्र. सं.	पाठ	समय	अंक
1.	कंप्यूटर का परिचय	20 घंटे	20
2.	कंप्यूटर की कार्यप्रणाली	15 घंटे	15
3.	इनपुट, आउटपुट एवं स्टोरेज डिवाइस	15 घंटे	15
4.	ऑपरेटिंग सिस्टम	20 घंटे	20
5.	पेंट ब्रश और कंप्यूटर गेम्स	15 घंटे	15
6.	वर्ड प्रोसेसिंग	15 घंटे	15
	कुल	**100 घंटे**	**100**

6. पाठ्यक्रम का विवरण

पाठ-1: कंप्यूटर का परिचय

कम्प्यूटर का परिचय, विशेषताएं, प्रयोग, विकास, कंप्यूटर के प्रकार, कंप्यूटर खोलना तथा बंद करना, प्रयोग में बरती जाने वाली सावधानियां।

पाठ-2: कंप्यूटर की कार्यप्रणाली

कंप्यूटर हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर का अर्थ, कंप्यूटर में प्रयोग होने वाले विभिन्न सॉफ्टवेयर, कंप्यूटर की विभिन्न भाषाएं, कंप्यूटर की शब्दावली।

पाठ-3: इनपुट, आउटपुट एवं स्टोरेज डिवाइस

इनपुट डिवाइस और उसके प्रकार, आउटपुट डिवाइस और उसके प्रकार, प्रिंटर और उसके प्रकार, स्पीकार और प्लॉउटर।

पाठ-4: ऑपरेटिंग सिस्टम

ऑपरेटिंग सिस्टम का अर्थ, ऑपरेटिंग सिस्टम पर कार्य करने की प्रक्रिया, डेस्कटॉप के विभिन्न भाग, फाइल फोल्डर और उपफोल्डर बनाना।

पाठ-5: पेंट ब्रश और कंप्यूटर गेम्स

पेंट ब्रश का अर्थ, कंप्यूटर में पेंट ब्रश खोलना, पेंट ब्रश के विभिन्न टूल बॉक्स, पेंट ब्रश में चित्र बनाना एवं रंग भरना, फाइल सेव करना, खोलना एवं बंद करना, कंप्यूटर में गेम्स (खेल) खेलना।

पाठ-6: वर्ड प्रोसेसिंग

वर्ड प्रोसेसर्स प्रोग्राम का अर्थ, वर्ड प्रोसेसर्स प्रोग्राम को खोलना और बंद करना, पाठ्य सामग्री (टेक्स्ट) को टाइप करना, टाइप किये गये टेक्स्ट में सुधार, टेक्स्ट को सजाना (फॉरमेट), टेक्स्ट को सुरक्षित (सेव) करके फाइल या डक्यूमेंट बनाना, डक्यूमेंट बंद करना, पहले से बनी फाइल को खोलना।

7. अध्ययन-योजना

यह पाठ्यक्रम दूरस्थ शिक्षा के माध्यम से दिया जाएगा। पाठ्यक्रम मूलत: स्वाध्याय पर आधारित है। इस बात को ध्यान में रखते हुए शिक्षार्थी के मानसिक स्तर को ध्यान में रखकर सामग्री तैयार की गई है। प्रत्येक पाठ के अन्त में अभ्यास के प्रश्न दिए गए हैं, ताकि शिक्षार्थी की धारण-क्षमता विकसित हो सके तथा, साथ ही, लिखने व विचार करने की क्षमता भी बढ़े।

शिक्षार्थियों के लिए अध्ययन केन्द्रों पर सम्पर्क-कक्षाओं का भी प्रावधान है। इन सम्पर्क-कक्षाओं में शिक्षार्थी अपनी विषय सम्बन्धी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे। साथ ही, वहाँ पर अन्य शिक्षार्थियों से भी इन समस्याओं पर चर्चा कर सकेंगे। शिक्षार्थी साक्षरता केन्द्रों / प्रौढ़ शिक्षा केन्द्रों पर भी अपनी विषय-सम्बन्धी समस्याओं का समाधान पा सकेंगे।

8. मूल्यांकन-योजना

8.1 स्व-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम में शिक्षार्थी अपना मूल्यांकन करते रहेंगे। इसके लिए हर पाँच पाठ के बाद एक जाँच पत्र दिया गया है। जाँच पत्र में उन्हीं चार पाठों से सम्बन्धित प्रश्न पूछे गए हैं। शिक्षार्थी को इन प्रश्नों के उत्तर देने हैं। पुस्तक के अन्त में इन जाँच पत्रों के सही उत्तर दिए गए हैं। शिक्षार्थी अपने उत्तरों का सही उत्तरों से मिलान करके अपना मूल्यांकन करते रहेंगे। इस तरह पाठ्यक्रम में स्व-मूल्यांकन की पद्धति अपनाई गई है।

8.2 बाह्य-मूल्यांकन

पाठ्यक्रम पूरा करने के उपरांत शिक्षार्थी का बाह्य मूल्यांकन होगा। इसके लिए कुल 100 अंक निर्धारित किए गए हैं। प्रश्न पत्र तीन घंटे मिनट का होगा। इसमें पाठ आधारित प्रश्न होंगे। बोध पर आधारित प्रश्न भी होंगे। साथ ही, सामान्य समझ पर आधारित प्रश्न भी होंगे। प्रश्न वस्तुनिष्ठ, अति लघु उत्तरीय, लघु उत्तरीय और दीर्घ उत्तरीय होंगे।